युक्ति में भारतीयों का जोड़ नहीं

वैसे तो वर्तमान काल में भारत की साख विशेषकर विदेशों में, कम्प्यूटर एवं संचार सम्बन्धी उच्च स्तरीय तकनीकी उन्नति एवं योगदान के कारण मानी जा रही है। परन्तु अगर इस साख के भीतर झाँक कर देखा जाय तो पता चलता है कि परोक्ष रूप से भारतीयों की इस सफलता के पीछे उनकी एक मुख्य विशेषता है, और वह है इनकी युक्ति यानि कि जुगाड़ की व्यवस्था।

कम्प्यूटर का अन्वेषण एवं उच्चस्तरीय प्रयोग करीब 50-60 साल पहले शुरू हो गया था, परन्तु उन दिनों कम्प्यूटर इतने महँगे एवं दुष्कर थे कि उनका प्रयोग सिर्फ गिने-चुने जगहों पर ही किया जा सकता था, जैसे कि रक्षा से संबंधित अस्त्र-शस्त्र के विकास में, आंतरिक्षीय प्रयोगों में, स्वास्थ्य से संबंधित शोध कार्यों में, आदि, आदि। ज्यादातर अमरीका, रूस तथा अन्य पाश्चात्य देश ही इस ज्ञान के मालिक थे। सन् अस्सी के दशक के शुरू में सर्वप्रबल कम्प्यूटर सिर्फ अपने ही लिए नहीं बल्कि निर्यात के लिए भी उपलब्ध है। परन्तु भारत की साख एवं आमदनी इस सर्वप्रबल सुपर कम्प्यूटर से नहीं है, बल्कि 'साफ्टवेयर' विकास के कारण जमी है। साफ्टवेयर किसी कम्प्यूटर में ऐसा काम करता है जैसे कि शरीर में मस्तिष्क। साफ्टवेयर विकास में सिर्फ मस्तिष्क की आवश्यकता होती है, किसी फैक्ट्री की नहीं। भारतीयों ने कम्प्यूटर साफ्टवेयर के क्षेत्र में आगे बढ़ने का कार्य सिर्फ युक्तिपूर्ण अपने जुगाड़ू दिमाग की वजह से किया।

चूँकि कम्प्यूटर मशीन बनाने के लिए फैक्टरी, इत्यादि लगानी पड़ती है और भारतीयों के पास पर्याप्त धनराशि थी नहीं तो इन्होंने ऐसा जुगाड़ लगाया कि ये कम्प्यूटर मस्तिष्क यानी कि साफ्टवेयर बनायें। साफ्टवेयर निर्माण के लिए सिर्फ कागज और कलम की आवश्यकता होती है और यदि एक कम्प्यूटर मिल जाय तो उसमें सैकड़ों लोग अपने साफ्टवेयर का परीक्षण कर

कम्प्यूटर का प्रयोग सरकारी तौर पर आम हो गया था। अमरीका जैसे देशों में तो व्यक्तिगत रूप से इनका प्रयोग शुरू हो गया था। उसी बीच भारत ने अमरीका से एक 'सुपर कम्प्यूटर' खरीदने का आग्रह किया जिससे कि मौसम पूर्वानुमान में भारतीय जनता को सहायता मिल सके। भारत के इस आग्रह को अमरीका ने अस्वीकार कर दिया था। क्योंकि उसे शक था कि भारत इस कम्प्यूटर को फौजी अस्त्र-शस्त्रों के विकास में लगा सकता है। नतीजा यह हुआ कि आज भारत के पास संसार का सकते हैं। इस तरह से भारतीय लोग अपनी जुगाड़ी व्यवस्था का प्रयोग कर आज सारी दुनियाँ पर छा गये हैं। इस क्षेत्र में प्रवासी एवं अप्रवासी दोनों ही तरह के भारतीयों का पूरा योगदान है। आज अमरीका में भारतीय करोड़पतियों की बाढ़ सी आ गयी है। इनमें से ज्यादातर डॉटकॉम कम्पनियों के मालिक हैं जिन्होंने कम्प्यूटर साफ्टवेयर के उपयोग से बहुत धन एवं प्रतिष्ठा कमा ली है।

आज भारत लगभग 2-3 खरब रुपयों का साफ्टवेयर सम्बन्धी वस्तुओं

● डॉ० बलराम सिंह
प्रोफेसर, बायोकेमेस्ट्री - युनिवर्सिटी ऑफ मासाचुसेट्स, डार्टमाउथ, यू०एस०ए०

का निर्यात करता है। अमरीका और जर्मनी के लोग नतमस्तक हो आज भारतीय प्रवीणों का स्वागत करते हैं। रूस, चीन, जापान के लोग भारतीयों की प्रतिस्पर्धा में लगे हैं। यह सब आज भारतीय जुगाड़ परम्परा के कारण हो रहा है। कहा जाता है कि भगवान श्रीराम ने इसी भारतीय जुगाड़ का प्रयोग कर समुद्र

आखिर, ये जुगाड़ (युक्ति) होती क्या चीज है? जुगाड़ की कई परिभाषायें हैं, उनमें से सबसे सीधी परिभाषा है कि जुगाड़ एक ऐसी व्यवस्था है जो कि किसी भी असंभव कार्य को बड़ी ही सरलता से सम्भव कर दे। जुगाड़ व्यवस्था विद्यालय, महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में नहीं पढ़ाई जाती है। यह मनुष्य के मस्तिष्क में स्वतः होती है और इसे प्रकट करने के लिए सिर्फ विचार एवं कर्मठता की आवश्यकता होती है। भारतीयों ने इसका प्रयोग आज नहीं आदि से किया है।

पर सेतु का निर्माण किया था।

आखिर, ये जुगाड़ (युक्ति) होती क्या चीज है? जुगाड़ की कई परिभाषायें हैं, उनमें से सबसे सीधी परिभाषा है कि जुगाड़ एक ऐसी व्यवस्था है जो कि किसी भी असंभव कार्य को बड़ी ही सरलता से सम्भव कर दे। जुगाड़ व्यवस्था विद्यालय, महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में नहीं पढ़ाई जाती है। यह मनुष्य के मस्तिष्क में स्वतः होती है और इसे प्रकट करने के लिए सिर्फ विचार एवं कर्मठता की आवश्यकता होती है। भारतीयों ने इसका प्रयोग आज नहीं आदि से किया है। इसी कारण से ही भारत आज जहाँ मानसिक रोगों पर न के बराबर रुपया खर्च करता है वहीं पर अमरीका साढ़े चार अरब रुपया खर्च करता है। सोचनीय बात तो यह है कि अब भारत में भी पाश्चात्य प्रभाव से ग्रसित अमीर परिवारों में यह मानसिक बीमारी फैलती जा रही है।

ग्रामवासियों में जुगाड़ की भावना सर्वाधिक दिखाई देती है। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण तो मेरी हाल की भारत की यात्रा के दौरान सुल्तानपुर जिले के हलियापुर नगर के पास दिखाई पड़ा। जैसा कि चित्र से जाहिर है कि एक व्यक्ति अपनी साइकिल पर बिना किसी अन्य उपकरण की सहायता लिए एक सौ कच्ची ईंटों को लादकर भट्टे पर पकाने के लिए ले जा रहा था। इसी जुगाड़ का प्रयोग कर उसने अपने भट्टे

—शेष पृष्ठ 14 पर

स्वामी श्री योगी सत्यम् व ईश्वर भाई पटेल की विश्व एकता पर वृहत् वार्ता

● मीरामाता, क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

मार्च 1, डार्टमाउथ होटल, डार्टमाउथ मासाचुसेट्स में स्वामी श्री योगी सत्यम् व वोस्टन निवासी अप्रवासी भारतीय श्री ईश्वर भाई पटेल जी ने विश्व के सभी देशों को एक सूत्र में जोड़ने के विभिन्न उपायों पर विशद् विचार-विमर्श किया। 'अखण्ड भारत सन्देश' के प्रबन्ध संपादक श्री ईश्वर भाई पटेल जी ने श्री योगी जी को बताया कि मैं बहुत दिनों से इस विचार में था कि

सभी धर्मों के मुखिया एक सार्वजनिक मंच पर आकर सभी आध्यात्मिक ग्रन्थों में निहित एक सत्य को स्वीकार करें। आध्यात्मिक तथ्यों की गलत व्याख्या होने से मनुष्य जातियों में बँट गये हैं। आज हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई अपने को दूसरे से अच्छा बताते हैं। आध्यात्मिक ग्रन्थों की सही व्याख्या से मानव एकता आसानी से सम्भव है। ईश्वर भाई ने स्वामी जी से निवेदन किया कि हमें 'अखण्ड भारत सन्देश' के प्रत्येक अंक में गीता, बाइबिल, कुरान व गुरुग्रन्थ साहिब में निहित सत्य को वैज्ञानिक तरीके से प्रकाशित करना चाहिए। ऐसा होने से सभी लोगों में भाईचारा बढ़ेगा, सभी लोग शान्ति की अनुभूति करेंगे। शान्ति के बढ़ने से सभी की जीवन शक्ति बढ़ेगी, रोगी निरोग होंगे, लोग कर्मठ होंगे और देश प्रगति करेगा जिससे हमारी मानवता अखण्डित होगी। बाद में श्री पटेल जी ने बताया कि सन् 1994 में उनकी स्वामी जी से मुलाकात के बाद क्रियायोग विज्ञान में निहित सत्य - 'गीता, बाइबिल, कुरान, गुरुग्रन्थ साहिब आदि सभी आध्यात्मिक ग्रन्थों में भगवान के एक ही स्वरूप का वर्णन है' उन्हें विधिवत समझ में आया।

दीप प्रज्ज्वलित कर अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग महोत्सव का उद्घाटन करते हुए सांसद श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल (बाएँ), इस अवसर पर उपस्थित साधकों एवं श्रोताओं तथा मंच का एक दृश्य (दायें)